अध्याय पहला

कबीर का जीवन-परिचय।

'कबीर का जीवन परिचय' -

प्रस्तावना --

कबीर के जीवन के विषय में ऐतिहासिक तथ्यों में एकरूपता नहीं पायी जाती। इस के कारण उनकी जीवनी के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ कहना सत्य पर अन्याय करना हो सकता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए ही हमें उनकी जीवनी का अध्ययन करना चाहिए।

जन्म तिथि और काल --

"हम प्रगटे चन्दवारे जाई। पूरब प्रगट शब्द गुहराई।।
बरसायत दिन हम प्रगटाना। ताल माहिं पुरइन मल जाना।।"[1]

निर्भयज्ञान की इन पंक्तियों से तथा ज्ञान सागर की 'आसन कर आयो चंदवारा।' इस पंक्ति से या कबीर पंथियों में प्रचलित --

"चौदह सौ पचपन साल गए, चन्द्रवार इक ठाट गए।
जेठ सुदी बरसात को, पूरन मासी प्रगट भए।।"[2]

इन पंक्तियों से बरसाती दिनों में सोमवार के दिन कबीर, प्रकट हुए, यही मानना पडता है। यद्यपि डा. बाबू श्यामसुन्दरदास के अनुसार तिथि गणना से इनमें फर्क आता है। तथा डा. माताप्रसाद गुप्त ने भी दोहे में वर्णित मत पर आक्षेप किया है।

डा. गोविन्द त्रिगुणायत सारी उपलब्ध सामग्री की जाँच परख कर इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि कबीर का जन्म सम्वत १४५५ में ही हुआ। ' कबीर-चरित्र-बोध ' के अनुसार कबीरदासजी की जन्मतिथि सम्वत १४५५ वि. ज्येष्ठ सुदी पूर्णमासी, सोमवार निश्चित होती है। यद्यपि बाबू श्यामसुन्दर दास, पं. रामचन्द्र शुक्ल आदि ने इसे १४५६ माना है परन्तु अधिकांश विद्वान १४५५ को ही उनका जन्म सम्वत मानने के पक्ष में हैं क्योंकि ज्योतिष-गणना के अनुसार १४५५ में तिथि एवं वार की शुध्द संगति बैठती है। '[3]

इन विविध मतों का विचार करने के बाद हम इस विचार पर पहुँचते हैं कि इस बारे में कोई निश्चित पूर्वग्रह रखना कितना अनुचित है।

नामकरण --

नवजात बालक का नाम एक काजी ने कुरान शरीफ खोलकर जिस शब्द को चुना वही ' कबीर ' हो गया। अरबी में जिसका अर्थ ' महान ' है।

' कबीर नाम के सम्बन्ध में बहुत जनश्रुतियाँ प्रसिध्द हैं। एक किंवदन्ती है कि कबीरदास जी का जन्म हाथ के अँगूठे से हुआ था इसीलिए उन्हें करवीर वा कबीर कहा जाने लगा। इस सम्बन्ध में एक दूसरी किंवदन्ती भी है। कहते हैं कि कबीर के नामकरण के अवसर पर काजी ने जब नाम निश्चित करने के लिए कुरान खोली तो उसे सबसे प्रथम कबीर शब्द दिखाई पडा इसलिए उसने इनका नाम कबीर रख दिया। कबीर का कबीर नाम पूर्ण सार्थक भी था। अरबी भाषा में कबीर का अर्थ महान होता है। यह प्राय: ईश्वर के विशेषण के रूप में ही प्रयुक्त

होता है । कबीर ने जहाँ अपनी रचनाओं में अपने नाम की मुहर लगाने के लिए इस नाम का प्रयोग किया है वहीं उन्होंने अपने वास्तविक अर्थ महान के अर्थ में भी प्रयुक्त किया है ।

" कबीरा तू ही कबीरन तू तोरो नाम कबीर ।
राम रतन तब पाइअँ जड पहिलें तजहि शरीर ।।"[४]

जन्मस्थान --

कबीर के जन्मस्थान के बारे में प्रमुख तीन मत हैं । मगहर, काशी और आजमगढ में बेलहरा गाँव । कबीर की ही रचना में काशी देखने से पहले उन्होंने मगहर देखा । वे लिखते हैं मरने से पहले भी वे मगहर ही लौटे थे । मगहर काशी के पास ही है और वहाँ कबीर का मकबरा भी है ।

यद्यपि यह सच है कि कबीर ने अपना बहुत सारा जीवन काशी में ' काशी के जुलाहे ' की तरह बिताया लेकिन उनका जन्म काशी में हुआ इसका प्रमाण नहीं मिलता है । ' बनारस जगट ' में यह उल्लेख मिलता है कि कबीर ' बेलहरा ' गाँव में जन्मे थे, शायद इसी कारण जनश्रुति है कि वे ' लहरतारा ' में पैदा हुए । लेकिन वैसा कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिलता । आजमगढ जिले में कबीर, उनका पंथ या उनके अनुयायियों का कुछ स्मारक नहीं है ।

इससे निष्कर्ष निकालते हुए डा. बडथ्वाल ने लिखा है --" इससे जान पडता है कि काशी में बसने के पहले वह केवल मगहर में रहते ही नहीं थे, वहीं उन्हें पहले-पहल परमात्मा का दर्शन भी प्राप्त हुआ था । अधिक संभव यह है कि कबीर का जन्म मगहर में ही हुआ हो, जो आज भी प्रधानतया जुलाहों की बस्ती है ।"[५]

कबीर की जाति --

कबीर की जाति के बारे में प्रमुख तीन तर्क किए गए हैं । उनकी अपनी रचनाओं में वे ' जोलाहा ' और ' कोरी ' इस तरह अपने आपको मानते हैं ।

वाराणसी के `जुलाहे` उस समय जादह तर मुसलमान ही थे । उत्तर-प्रदेश के `कोरी` भी एक तरह से वयनजीवी हैं । डा. हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार कबीर `जुगी` या `जोगी` जाति के थे । वे वयनजीवी हैं और उन्होंने इस्लाम कबूल कर लिया था । इस स्थापना के समर्थन में द्विवेदी जी ने यह समर्थन दिया है कि `कबीर अपने आपको `जोलाहा` कहते हैं, पर कहीं मुस्लिम नहीं कहते ।` कहीं वे अपने आपको `ना हिन्दू ना मुस्लिम` कहते हैं । वे जोगी, हिन्दू और मुस्लिम, बिल्कुल अलग - अलग जाति समूह मानते हैं ।

कबीर ने अपनी रचनाओं में अपने को जुलाहा और कोरी दोनों कहा है । अब प्रश्न यह उठता है कि कबीर ने अपने को कोरी और जुलाहा दोनों कैसे कहा । जुलाहे मुसलमान होते हैं और कोरी हिन्दू । सबसे प्रथम डा. बडथ्वाल ने इस प्रश्न पर विचार करते हुए लिखा है कि `सम्भव है जुलाहा कहने से उनका अभिप्राय केवल पेशे से हो, उनके धर्म का कोई उसमें संकेत न हो । अनुश्रुति के अनुसार वे जन्म से हिन्दू थे किन्तु पालन मुसलमान के घर में हुआ था परन्तु इस बात का प्रमाण मिलता है कि वस्तुत: उनका जन्म मुसलमान के परिवार में हुआ था ।` [६]

इन पंक्तियों में डा. साहब का मत कुछ स्पष्ट नहीं हो पाया है । बाद में चलकर उन्होंने अपने मत को पूर्णतया स्पष्ट किया है । `निर्गुण स्कूल आफ हिन्दी पोयट्री` में वे लिखते हैं --

`मेरी समझ में कबीर किसी प्राचीन कोरी अर्थात तत्कालीन जुलाहाकुल के थे जो मुसलमान होने के पहले जोगियों के अनुयायी थे । उनके वंशावालों ने यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से इस्लाम को स्वीकार कर लिया था फिर भी परम्परागत संस्कारों से उनका मानसिक सम्बन्ध नहीं छूटा था ।` [७]

"जोगी गोरख गोरख करैं, हिन्दू रांम नाम उच्चरैं ।
मुसलमान कहैं एक खुदाइ, कबीरा कौं स्वामी घटि घटि रह्यौ समाइ ।।`

कबीर की वाणियों में बौध्द, हिन्दू और इस्लाम धर्मों की विचारधारा के प्रमाण दिख पडते हैं । कबीर के परिवार वाले नए-नए मुसलमान बने थे, किन्तु

संस्कार उनके बौध्द धर्म के हो थे, अत: वे हिन्दुओं तथा मुसलमानों की अनेक धार्मिक मान्यताओं पर आघात करते थे । "संक्षेप में कहा जा सकता है कि कबीर की जाति कोरी थी जो प्राचीन कोलिय जाति से सम्बध्द थी और जिसे जुलाहा नाम से भी पुकारा जाता था । इसलिए कबीर ने अपने को `जुलाहा` और `कोरी` कहा है तथा इनमें भेद नहीं माना है ।"[१]

कबीर के गुरु --

कबीर की शिक्षा और गुरु परम्परा के बारे में कई अनुमान हैं । उन्होंने विधिवत् किसी शाला में भाषा, दर्शन या कपडा बुनने के काम की शिक्षा नहीं प्राप्त की थी । उनके साहित्य में गुरु शब्द का उपयोग ईश्वर के अर्थ में कई जगह उन्होंने किया है । इससे डा. मोहनसिंह का मत है कि उनका आध्यात्मिक या पारलौकिक विद्या का कोई गुरु नहीं था । इसी कारण वे निगुरे कहलाए । उनका दार्शनिक चिन्तन उनके अन्तर्ज्ञान का फल था और आध्यात्मिक साधना बहुत अंशों में आत्मोपलब्धि । लेकिन मालकम वेस्ट कॉट और डा. आर.एस. त्रिपाठी कबीर के उस्ताद `शेखतकी` थे ऐसा मानते हैं । `खजिनात-उल-आसफियाँ` में यही कहा गया है । यद्यपि कबीर के पदों तथा रचनाओं पर सीधा सूफी सम्बन्ध नहीं दीखता, फिर भी उन पर `तसव्वुफ` का गहरा प्रभाव है ।

रामानन्द को कबीर का गुरु मानने के सम्बन्ध में डा.रामकुमार वर्मा का कथन है :--

"कबीर बचपन से ही धर्म की ओर आकर्षित थे । वे भजन गाया करते थे और लोगों को उपदेश दिया करते थे, पर निगुरा होने के कारण लोगों में आदर के पात्र नहीं थे और उनके भजनों और उपदेशों को भी कोई सुनना पसन्द नहीं करता था । इस कारण वे अपना गुरु खोजने की चिन्ता में व्यस्त हुए । उस समय काशी में रामानन्द की बडी प्रसिध्दि थी । कबीर उन्हीं के पास गए, पर कबीर के मुसलमान होने के कारण उन्होंने उन्हें अपना शिष्य बनाना स्वीकार

नहीं किया । वे हताश तो बहुत हुए पर उन्होंने एक चाल चली । प्रात:काल अँधेरे ही में रामानन्द पंचगंगा घाट पर नित्य स्नान करने के लिए जाते थे । कबीर पहले से ही उनके रास्ते में घाट की सीढ़ियों पर लेटे रहे । रामानन्द जैसे ही स्नानार्थ आए, वैसे ही उनके पैर की ठोकर कबीर के सिर में लगी । ठोकर लगने के साथ ही रामानन्द के मुख से पश्चात्ताप के रूप में `राम` शब्द निकल पडा । कबीर ने उसी समय उनके पैर पकडकर कहा, `महाराज` , आज से आपने मुझे राम नाम से दीक्षित कर अपना शिष्य बना लिया । उसी समय से कबीर रामानन्द के शिष्य कहलाने लगे ।"[१०]

रामानन्द के सम्बन्ध के बारे में भी यही कहा जा सकता है । कबीर इतना ही कहते हैं -- ` मेरे गुरु बनारस में हैं ।` रामानन्द के उपदेश और कबीर बाणी में बहुत ही समानता है । ` दबिस्तान-ई-तवारिख ` के लेखक मोहसान फानी और ` भक्त-माल ` के रचयिता नाभादास और उसके टीकाकार प्रियादास के अनुसार स्वामी रामानन्द कबीर के गुरु थे ।

मेरी अपनी धारणा यही है कि कबीर रामानन्द के शिष्य थे । इस धारणा की पुष्टि में डा. गोविन्द त्रिगुणायत निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत करते हैं --

" १. कबीर और रामानन्द लगभग समकालीन थे । रामानन्द युग के महान आचार्य थे । ऐसे महान आचार्य को छोडकर कबीर और किसी को गुरु नहीं बना सकते थे ।

२. रामानन्द और कबीर की विचार धारा में बडा साम्य है । यह साम्य संभवत: इसलिए है कि कबीर रामानन्द के शिष्य थे । शिष्य का गुरु की विचारधारा से प्रभावित होना स्वाभाविक है ।

३. कबीर और रामानन्द के गुरु-शिष्य सम्बन्ध को ध्वनित करती हुई बहुत-सी किंवदंतियाँ प्रसिद्ध हैं । किंवदंतियाँ स्वयं अतिरञ्जनापूर्ण और कपोल कल्पित होती हैं किन्तु उनका मूलाधार

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

सत्य निर्विवाद ही होता है । अत: इस आधार पर भी कबीर और रामानन्द में हम गुरु और शिष्य का सम्बन्ध मान सकते है ।" [११]

अत: रामानन्द को ही कबीर का गुरु कहना उचित होगा । कबीर की सारी विचारधारा स्वामी रामानन्द से प्रभावित है । हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान डा.रामकुमार वर्मा, आचार्य डा.हजारीप्रसाद जी तथा डा. श्याम सुन्दर दास और डा.बडथ्वाल आदि इसी मत के पक्ष में है ।

विवाह तथा परिवार --

कबीर का पारिवारिक जीवन बहुत सुखमय नहीं रहा होगा । अथक साधक होते हुए भी उन्होंने लौकिक बन्धनों को सम्पूर्णतया नहीं छोडा था । अपने परिवार के भरण-पोषाण की जिम्मेदारी वे उठाते थे, उसके लिए श्रम करते थे । जनश्रुतियों के अनुसार उनकी पत्नी का नाम `लोई` था । जिसके माँ-बाप का पता ठीक तरह से मालूम नहीं है । कुछ लोग `लोई` उनकी शिष्य थी ऐसा भी मानते थे । कबीर की एक अन्य पत्नी भी थी, जिसका नाम `धनिया` था । कभी-कभी उसका `रामजनिया` यह भी नामोल्लेख पाया जाता है । जैसे कि श्री गुरुग्रन्थ साहब की ये पंक्तियाँ उद्धृत है --

" मेरी बहुरिया को धनिआ नाउ ।
लै राखिओ रामजनीआ नाउ ।।" [१२]

यह रूपवती थी तथा नर्तकी भी थी, ऐसा माना जाता है । कबीर का `कमाल` नाम का एक पुत्र और `कमाली` नाम की एक बेटी थी । उनकी पत्नी को कबीर के पारलौकिक साधना के विचार पसन्द नहीं थे और कबीर उसके सम्बन्ध में कटु शब्द लिखते है -- जैसे कुरूपि,कुजाति,कुलखनी । इसी प्रकार उनकी सन्तान को भी उनके विचार पसन्द नहीं थे ।

" बूडा बंस कबीर का, उपजिओ पुतु कमालु ।
हरि का सिमरनु छांडि कै, घरि लै आया मालु ।।"[13]

हमारे यहाँ की रीति के अनुसार शिष्य को पुत्र माना जाता है । उसी के अनुसार कोई 'कमाल' को भी उनका शिष्य ही मानते हैं । 'कमाली' शेखतकी की बेटी थी और कबीर ने अपनी पुत्री के रूप में पाला था ऐसा भी मानते हैं ।

निष्कर्ष के रूप में ऐसा कहा जा सकता है कि कबीर ग्रहस्थ जीवन अवश्य बिताते थे, किन्तु ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता जिसके आधार पर कहा जा सके , कि उनका विवाह हुआ था और उनकी सन्तान थी ।

कबीर का तीर्थाटन --

कबीर ने बहुत से स्थानों पर प्रवास और यात्राएँ की होंगी । इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं । अपने भजन में वह कहते हैं -- " मैं कई बार 'मक्का' और 'हज' पर गया हूँ ।' आचार्य क्षितिमोहन सेन ने कबीर की गुजरात यात्रा का उल्लेख किया है । 'खुलासातु-तवारिख' में उनकी रतनपुर यात्रा की बात है । "आदि-ग्रन्थ" में गोमति किनारे उनके सफर का वर्णन है --

'हज हमारी गोमति तीर,
जहाँ बसति पीताम्बर पीर ।'

'कबीर हज कावे होइ होइ गइआ केती बार कबीर ।'[14]

कबीर ने सारे भारत का पर्यटन किया था । वे कई बार हज भी गए थे । 'आईने अकबरी' में कबीर जगन्नाथ पुरी गए थे ऐसा लिखा है । 'कबीर मन्सूर' ग्रंथ में कबीर की बगदाद, समरकंद और बुखारा यात्राओं का ब्यौरा दिया है । इन यात्राओं में उन्हें निश्चय ही अतुल ज्ञान राशि प्राप्त हुई होगी । उनकी बानियों में वे ही ज्ञान राशि भरी हुई है ।

कबीर के चित्र --

कबीर के कई चित्र मिलते हैं। पर उनमें से कोई भी समकालीन नहीं है। कबीर के जितने भी चित्र प्राप्त हैं उससे सब से पुराना चित्र `ब्रिटिश म्यूजियम` में उपलब्ध है। इस चित्र में कबीर करघे पर खुले बदन बैठे हैं। गले में मनकों की माला है। इस प्रकार की माला अब भी कई भक्त पहनते हैं। कबीर के दोनों ओर दो शिष्य हैं। एक के गले में हार है, दूसरा मुस्लिम जान पडता है, जिसके हाथ में एक वाद्य है। इस चित्र में कबीर के कोई दाढी नहीं है।

`गुरु अर्जुनदेव गुरुद्वारे` में एक प्राचीन चित्र है, जिसमें कबीर करघे पर बैठे है और उनकी दाढी भी है। `कबीर चौरा` बनारस में लगे और `रामानन्द ते रामतीर्थ` तथा `कबीर वचनावली` ग्रंथों में छपे चित्रों में उन्हें सूफी संत दिखाया गया है। `चित्रशाला प्रेस` पुणे से प्रकाशित चित्र बहुत बाद का है और उसमें उन्हें हिंदू साधु की तरह दिखाया गया है।

कबीर के प्राचीनतम चित्र में उन्हें करघे के सामने बैठे हुए दिखाया गया है और निकट ही लगभग समान अवस्था के एक युवक तथा एक युवती के चित्र भी है, उन्हें शिष्य-शिष्या अथवा पुत्र-पुत्री के रूप में ग्रहण किया जा सकता है। किन्तु इससे अधिक प्रमाण उनके परिवारादि के सम्बन्ध में नहीं मिलता।

कबीर स्वयम् में कैसे थे, उनका रूप और बाना क्या था, क्या पहनते थे, इसका अनुमान इतने सारे चित्रों से नहीं लगाया जा सकता। शायद यही उचित था कि निर्गुण-निराकार परमेश्वर को माननेवाले कबीर स्वयं निराकार रह गये - `बिना रूप के केवल एक नाम` बचे रहे।

प्रामाणिक कृतियाँ --

कबीर की प्रामाणिक कृतियों का अनुसन्धान अत्यन्त कठिन कार्य है। उन्होंने स्वयं अपनी वाणी को लिपिबध्द नहीं किया था। उनके शिष्यों ने कुछ

को लिपिबद्ध किया और कुछ लोगोंने जबानी याद रखा और उसका स्वरूप धीरे-धीरे बदलता रहा । कबीर पंथी सन्तोंने अपनी रचनाओं को भी कबीर के नाम से प्रसारित किया । कबीर वाणी को 'कबीर पंथी' वाङ्मय से अलग करना कोई सहज साध्य बात नहीं है । इसी कारण कबीर के प्रामाणिक साहित्य के ग्रंथों की रचना तथा संख्या इनमें इनकी संख्या ८१ मानते हैं । मिश्रबन्धु ७५ से ८४, तो 'कबीर अॅन्ड हिज फालोअर्स' में डा.एफ.ई.के.ने इनकी संख्या ३८ मानी है । नागरी प्रचारिणी सभा १९५५ इसवी तक के खोज-विवरण के आधार पर यह संख्या १५८ मानती है । तो श्री विल्सन अपने 'रिलीजस सेक्टस ऑफ दी हिन्दूज' इसमें कबीर की सिर्फ आठ रचनायें मानते हैं --

१.आनन्द राम सागर
२.बलख की रमैनी
३.चाँचरा
४. हिंडोला
५.झूलना
६.कबीर पंजी
७.कहरा
८.शब्दावली *१५

कबीर साहित्य पर कई प्रामाणिक संस्करण प्रस्तुत करने के महत्वपूर्ण प्रयास किए गये हैं । जैसे ---

१. कबीर वचनावली (१९१६ ई.) सं.
अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
२. कबीर ग्रंथावली (१९२८ ई.) सं.
डा.बाबू श्यामसुन्दर दास
३. संत कबीर (१९४३ ई.) सं.
डा. रामकुमार वर्मा

४. कबीर ग्रंथावली (सन १९६१ ई.) सं.
डा.पारसनाथ तिवारी

५. कबीर ग्रंथावली (सन १९६९ ई.) सं.
डा.माताप्रसाद गुप्त

६. कबीर बीजक (सन १९७१ ई.) सं.
डा. शुकदेव सिंह

७. रमैनी (सन १९७४ ई.) सं.
जयदेव सिंह, वासुदेव सिंह [१६]

तात्पर्य यह कि एक ओर खोज रिपोर्टों को आधार मानकर कबीर के नाम के साथ समस्त कबीर पंथी साहित्य की गणना की जाती रही हैं और दूसरी ओर कबीर की प्रामाणिक रचनाओं के वैज्ञानिक संस्करण प्रस्तुत करने का भी प्रयत्न किया जाता रहा हैं।

कबीर साहित्य में कुछ-न-कुछ प्रक्षेप सभी परम्पराओं के पाठों में हुआ हैं। प्रमुखतया राजस्थानी पाठ परम्परा, पंजाबी पाठ परम्परा तथा पूर्वी(अवधी) पाठ परम्परा पाई जाती हैं। राजस्थानी और पंजाबी परम्परा के पाठ इसलिए विश्वसनीय नहीं हैं कि दादू पंथी, निरंजन पंथी, नानक पंथी सन्तोंने उन्हें अपनी मान्यताओं की सीमा के अनुकूल बनाया हैं। पूर्वी परम्परा में साम्प्रदायिक आग्रह के कारण पौराणिक तत्वों का समावेश होता रहा हैं। और कबीरदास को अलौकिक महिमा से मण्डित किया गया हैं।

कबीर के अध्ययन के लिए हमें इन सभी ग्रंथों को सामने रखना होगा और इनमें से किसी एक के पाठ को ही कबीर वाणी का प्रामाणिक रूप नहीं मानना होगा।

कबीर का देहावसान --

कबीर की मृत्यु तिथि भी अनिश्चित ही हैं। बहि:साक्ष्य और अन्त:-साक्ष्य दोनों में इनके सम्बन्ध में कोई भी संकेत नहीं पाया जाता। इनकी मृत्यु

तिथि के सम्बन्ध में निम्न दोहे प्रसिध्द हैं ---

'संवत पन्द्रह सौ औ पाँच मौ मगहर कियो गौन ।
अगहन सुदी एकादसी रसो पौन में पौन ।।'[१७]

'संवत पन्द्रह सौ पचहत्तर कियो मगहर को गौन ।
माग सुधी एकादसी रलो पौन पे पौन ।।'[१८]

कबीर की मृत्यु के संवत् १५०५ तथा १५७५ दोनों के ही सम्बन्ध में समान रूप से विश्वसनीय प्रमाण उपलब्ध होते हैं । लेकिन विद्वानों का झुकाव संवत १५०५ को उनकी निधन तिथि मानने की ओर होता जा रहा है ।

डा.पारसनाथ तिवारी 'कबीर पंथ' में प्रचलित संवत् १५७५ को ही उनकी निधन तिथि मानने के पक्ष में हैं । उनकी मृत्यु 'मगहर' में ही हुओ, यह सभी मानते हैं, लेकिन वहीं वे दफनाए गए इस सम्बन्ध में विवाद है । 'रतनपुर' में इनका शव दफनाया गया और वहीं उनकी समाधी है, उसकी पुष्टी 'शेर अली अफसोस', तथा 'ऐने अकबरी', 'खुलासातुत्वारिक' आदि के उल्लेखों से होती है ।

निष्कर्ष ----

कबीर जीवन के सम्बन्ध में हम इन निष्कर्षों पर आ जाते हैं :--

१. कबीर विक्रम की १५ वी शती में विद्यमान थे ।
२. उनका अधिकांश जीवन काशी में गुजरा ।
३. काशी में उन्हें अनेक विरोधों का सामना करना पडा ।
४. उनका परिवार था, वे जाति के 'जुलाहा' थे । यद्यपि वे आध्यात्मिक साधना करते थे, तथापि उन्होंने गृहस्थ जीवन का त्याग नहीं किया था ।
५. मृत्यु से पहले वे 'काशी' छोडकर 'मगहर' गये, वहीं उनकी मृत्यु हुओ ।
६. उन पर योग साधना और वैष्णव भक्ति दोनों के गहरे संस्कार हुये थे ।

उपर्युक्त तथ्यों के अतिरिक्त कबीर के विषय में जो कुछ कहा गया है, वह विवादास्पद है और उसके सम्बन्ध में निश्चय पूर्वक कुछ भी कहा नहीं जा सकता ।

संदर्भ सूची

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठ क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
१	कबीर-वाणी संग्रह	डा.पारसनाथ तिवारी	१४	राका प्रकाशन,इलाहाबाद ३ पंचम संस्करण,१९७५ ई.
२	कबीर-वाणी संग्रह	डा.परासनाथ तिवारी	१५	राका प्रकाशन, इलाहाबाद-२, पंचम संस्करण १९७५ ई.
३	कबीर-काव्य-कौस्तुभ	डा.बालमुकुन्द गुप्त	७	साहित्य संगम आगरा-३ चतुर्थ संस्करण १९७१
४	कबीर की विचारधारा	डा.गोविन्द त्रिगुणायत	३०	साहित्य निकेतन कानपुर-१ तृतीय संस्करण श्रावणी संवत २०२४
५	कबीर मीमांसा	डा.रामचन्द्र तिवारी	२७	लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद-१, प्रथम संस्करण १९७८
६	कबीर की विचारधारा	डा.गोविन्द त्रिगुणायत	३२	साहित्य निकेतन कानपुर-१ तृतीय संस्करण श्रावणी संवत २०२४
७	कबीर की विचारधारा	डा.गोविन्द त्रिगुणायत	३३	साहित्य निकेतन,कानपुर-१ तृतीय संस्करण श्रावणी संवत २०२४

सं.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन । प्रकाशक एवं संस्करण
८	कबीर ग्रंथावली	डा.त्रिलोकी नारायण दीक्षित	७७५	प्रकाशन केन्द्र,लखनऊ-७
९	कबीर-वाणी संग्रह	डा.पारसनाथ तिवारी	३४	राका प्रकाशन इलाहाबाद-१ पंचम संस्करण १९७५ ई.
१०	युगपुरुष कबीर	डा.रामलाल वर्मा डा.रामचन्द्र वर्मा	३४-३५	भारतीय ग्रंथ निकेतन दिल्ली-६,प्रथम संस्करण १९७८
११	कबीर की विचारधारा	डा.गोविन्द त्रिगुणायत	४२-४३	साहित्य निकेतन कानपुर-१,तृतीय संस्करण श्रावणी संवत् २०२४
१२	कबीर-वाणी संग्रह	डा.पारसनाथ तिवारी	२३	राका प्रकाशन, इलाहाबाद-२,पंचम संस्करण १९७५ ई.
१३	कबीर-वाणी संग्रह	डा.पारसनाथ तिवारी	२३	राका प्रकाशन इलाहाबाद-२,पंचम संस्करण १९७५ ई.
१४	कबीर की विचारधारा	डा.गोविन्द त्रिगुणायत	४६	साहित्य निकेतन कानपुर-१,तृतीय संस्करण, श्रावणी संवत् २०२४

सं.क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृ.क्र.	प्रकाशन - प्रकाशक एवं संस्करण
१५	कबीर मीमांसा	डा.रामचन्द्र तिवारी	४५	लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद-१, प्रथम संस्करण १९७६
१६	कबीर मीमांसा	डा.रामचन्द्र तिवारी	४७	लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद-१, प्रथम संस्करण १९७६
१७	कबीर की विचारधारा	डा.गोविंद त्रिगुणायत	४७	साहित्य निकेतन कानपुर-१, तृतीय संस्करण, श्रावणी संवत् २०२४
१८	कबीर की विचारधारा	डा.गोविन्द त्रिगुणायत	४७	साहित्य निकेतन कानपुर-१, तृतीय संस्करण, श्रावणी संवत् २०२४ ।

..